Note 6/8/20 Thu

Sociology

BA Part II
Paper — I
(सामाजिक गतिशीलता)
(Social Mobility)

Principles of Sociology

From:
Dr. Arun Kumar
Reader
Dept of Sociology
Shershah College
Sasaram

सामाजिक गतिशीलता सामाजिक परिवर्तन की ही एक आयाम है।

जब सामाजिक संरचना में या सामाजिक सम्बन्धों के प्रतिमान में कोई हेर-फेर होता है तो उस स्थिति को हम सामाजिक परिवर्तन कहते हैं, पर जब उसी सामाजिक संरचना को किसी इकाई की स्थिति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन होता है तो उसे सामाजिक गतिशीलता कहा जाता है। सामाजिक जीवन में व्यावहारिक तौर पर हम देखते हैं कि कितने ही व्यक्ति एक पेशे को छोड़कर दूसरे पेशे को एक धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म को अथवा एक वर्ग की सदस्यता को छोड़कर दूसरे वर्ग की सदस्यता को स्वीकार कर लेते हैं। अथवा एक समुदाय को त्यागकर दूसरे समुदाय में जाकर बस जाते हैं। हम व्यक्ति आज कलर्क हैं पर अपने प्रयत्नों के फलस्वरूप पढ़ लिखकर वही व्यक्ति एक प्रोफेसर अथवा आई.ए.एस (IAS) अफसर बन सकता है। जो कल तक कलकत्ता में रह रहा था वह आज दिल्ली में आकर बस जाता है। जो कल एक सामान्य श्रमिक वर्ग का सदस्य था वही आज लाखों रुपये की लाटरी जीतकर उच्च धनी वर्ग का सदस्य बन जाता है। ये सभी गतिशीलता के उदाहरण हैं और सामाजिक जीवन के एक — व्यावहारिक व चलायमान पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए यह कहा जाता है कि सामाजिक गतिशीलता का तत्व प्रत्येक समाज में होता है, फर्क केवल इतना ही है कि प्राचीन आदिकालीन या परम्परागत समाजों में विज्ञान व औद्योगिकी का विकास अधिक न होने के कारण और समाज धर्म प्रथा परम्परा

Scanned by TapScanner

आदि की जंजीरों मे जकड़ा होने के कारण सामाजिक इकाइयों के जीवन मे पर्याप्त सुस्थिरता होती है और नये प्रयोगों की सम्भावनाएं कम होती है। इसके विपरीत विज्ञान व तौकनीकी से सम्बन्ध आधुनिक समाजों मे व्यक्तिगत गुण सामाजिक अवसर प्रतिस्पर्धा आदि का महत्व अधिक होता है और व्यक्ति - अपनी सुविधा व सफलताओं के आधार पर एक स्थान से दूसरे स्थान को एक पद से दूसरे पद को एक पेशे से दूसरे पेशे को छलांग मारता चलता है यही सामाजिक गतिशीलता है जोकि अपने सुस्पष्ट रूप मे आधुनिक समाजों की एक विशेषता बन जाती है।

From -
Dr. Arun Kumar
Reader
Dept of Sociology
Sher Shah College
Sasaram
6/8/20

Scanned by TapScanner